BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 3, Issue 1, January-March 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

वाल्मिकी रामायण मिथिलापुरी

शशी, शोधछात्रा
प्रा० भा० इतिहास एवं पुरातत्व विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

वाल्मिकी रामायण मिथिलापुरी

वाल्मीकि रामायण में मिथिला का अनेक स्थलों पर उल्लेख किया गया है। रामायण में इस स्थान के लिए मिथिलापुरी, विदेह देश और जनकपुर के नाम से सम्बोधित किया गया है।' रामायण में इसे देश, राजधानी और नगर तीनों ही नामों से सम्बोधित किया गया है। महाभारत में मिथिला को विदेहदेश की राजधानी कहा गया है।'

वैदिक काल में शतपथ ब्राह्मण के अनुसार विदेह माधव ने अपने मुख में अग्नि को दबाकर सदानीरा (गंडक) नदी तक वनों को जलाया था। यह प्रक्रिया यह दर्शाती है कि आर्यों की सीमा सप्तसैन्धव क्षेत्र से पूर्वोत्तर हिमालय की तराई में स्थित सदानीरा तक विस्तृत हो गयी। यहाँ के लोग बहुत सभ्य थे। यजुर्वेद में वर्णित है कि प्राचीन भारत में यहाँ की गायें अपनी विशेषता के लिए बहुत प्रसिद्ध थी।"

विदेह माधव ने ही यहाँ अपना राज्य स्थापित किया होगा। ऋषि गौतम इनके कुल पुरोहित थे।' इसका उल्लेख हमें रामायण में भी प्राप्त होता है। जब महर्षि विश्वामित्र राजा जनक के पास पहुँचते हैं तो वहाँ महर्षि गौतम के पुत्र शतानन्द विराजमान थे, इतना ही नहीं प्राचीन महर्षि गौतम का आश्रम भी मिथिला की दक्षिणी सीमा पर स्थित था। वैदिक काल में गुरू गौतम ऋषि थे और रामायण काल में शतानन्द जो यह दर्शाता है। कि किस प्रकार प्राचीन काल से ही पुरोहित किसी कुल का पीढ़ी दर पीढ़ी पुरोहित होता था।

वाल्मीकि रामायण में इस राज्य की भौगोलिक सीमा का कोई उल्लेख नहीं किया गया है परन्तु वर्णित साक्ष्यों के आधार पर इसकी पश्चिमी सीमा सदानीरा (गंडक) नदी थी जो प्राचीन काल में कोशल और विदेह राज्य के मध्य सीमा का निर्धारण करती थी। इसकी उत्तरी सीमा पर हिमालय पर्वत वर्तमान नेपाल अवस्थित था क्यों कि जनक के यज्ञ में जाते समय महर्षि विश्वामित्र कहते हैं कि मैं हिमालय की उपत्यकाओं में में जा रहा हूँ।" इसकी पूर्वी सीमा पर आधुनिक कुशी नदी (तत्कालीन कौशिकी) नदी प्रवाहित होती थी।" इस राज्य की दक्षिणी सीमा पर अन्य राज्य विशालापुरी स्थित थी। उस समय वहाँ के शासक सुमति थे।" मिथिला राज्य की दक्षिणी सीमा पर राज्य में प्रवेश के साथ ही अहल्या आश्रम स्थित था।

@2025 Bihar Shodh Samaagam

कुछ साहित्यिक साक्ष्यों में इसके दक्षिण में गंगा नदी के प्रवाहित होने की बात कही गयी है, आध्यात्म रामायण में अहल्या आश्रम के बाद गंगा नदी पार करने का प्रसंग उद्धत है, जिसमें केवट श्री राम का चरण धोकर ही नाव से पार उतारने का हठ करता है क्यों कि उसे भय है कि उसकी नाव कहीं स्त्री न हो जाये। 14

इसी प्रकार कृतिवास रामायण में भी वर्णित है कि अहल्या उदार के बाद महर्षि विश्वामित्र राम लक्ष्मण सहित गंगा के तट पर पहुँचते हैं उन्हें देखकर केवट अपनी नाव छुपा देता है और चरण परवारने की अनुमति प्राप्त कर ही वह उन्हें नाव से पार उतारता है।" नाव में ही श्री राम, महषि से पूछते हैं कि अभी मिथिला कितनी द है? जवाब में महर्षि कहते हैं कि अभी तीन कोस दूर है।"

वाल्मीकि रामायण में गंगा नदी मिथिलापुरी की दक्षिणी सीमा पर स्थित राज्य विशालापुरी से पहले ही पड़ जाती है। महर्षि जब यज्ञ समाप्त कर राजा जनक के यज्ञ में जाते हैं तो मार्ग में 3 रात्रि का विश्राम करते हैं।

प्रथम शोणभद्र के तट पर।" द्वितीय गंगा नदी के तट पर और तृतीय विश्राम विशालापुरी राज्य में कर अगले दिन मिथिला की सीमा में प्रवेश कर अहल्या आश्रम में जाते हैं।" अहल्या उद्वार के बाद इशान कोण पर जाते हुए मिथिलानरेश के यज्ञमण्डल में प्रवेश करते हैं। 20

वर्तमान में यह स्थल नेपाल की सीमा पर स्थित उत्तरी विहार के आधुनिक जनकपुर नामक छोटे कस्बे से समीकृत किया गया है। इसके उत्तर में मुजफ्फरपुर और दरभंगा जिले स्थित हैं।"

प्राचीन काल में विवाह के अवसर पर कुल परम्परा बताने का विधान था, इसी क्रम में राजा जनक अपने कुल का परिचय देते हुए बताते हैं कि प्राचीन काल में निमि नामक परम धर्मात्मा राजा हुए।" राजा 'निमि' के 'मिथि' नामक पुत्र हुआ। इन्हें ही प्रथम जनक कहा जाता है। राजा जनक के उदावसु नामक पुत्र हुआ, जिनसे नन्दिवर्धन नामक पुत्र उत्पन्न हुआ, नन्दिवर्धन के पुत्र का नाम सुकेतु था, राजा सुकेतु के देवरात नामक पुत्र हुआ, देवरात के पुत्र का नाम वृहद्रथ था, वृहद्रथ के पुत्र का नाम महावीर था उसके पुत्र का नाम सुधृति हुआ। सुधृति के धर्मात्मा पुत्र धृष्टकेतु हुए। राजर्षि धृष्टकेतु का पुत्र हर्यश्व था, हर्यश्व के पुत्र को मरू नाम से सम्बोधित करते थे, मरू के पत्र प्रतीन्धक थे, प्रतीन्धक के पुत्र धर्मात्मा राजा कीर्तिस्थ हुए, कीर्तिस्थ के पुत्र देवमीढ़ नाम से विख्यात हुए, देवमीढ़ के विवुध और विबुध के पुत्र महीधक थे, राजा महीधक के पुत्र कीर्तिराज थे। राजर्षि कीर्तिराज के महारोमा नानक पुत्र हुआ, महारोमा के पुत्र का नाम स्वर्णरोमा था, स्वर्णरोमा के पुत्र हस्वरोमा थे। राजा हस्वरोमा के 2 पुत्र हुए एक तो मैं (जनक) और दूसरा मेरा छोटा भाई कुशध्वज है।

विष्णु पुराण में भी राजा जनक की यही वंशावली प्राप्त होती है परन्तु विष्णुपुराण में हयश्व के मरू के स्थान पर मनु और मनु के पुत्र का नाम प्रतीक वर्णित है। यहाँ पर सीता के पिता राजा जनक का नाम सीरध्वज उल्लिखित है।

भविष्यपुराण के अनुसार निमि के पुत्र मिथि ने मिथिला के सुरम्य नगर की स्थापना की थी इस नगर की स्थापना करने के कारण ही उन्हें जनक हां जाता है।" इस प्रकार राजा सीरध्वज (जनक) जो राजा दशरथ के समकालीन और उनके मित्र भी थे। अपनी वंश परम्परा के 22वें शासक थे इस आधार पर यदि प्राचीन आश्रम व्यवस्था की समय सीमा को आधार मानकर यदि प्रत्येक राजा की आयु 100 वर्ष मान ली जाय तो यह राजवंश रामायण काल या राजा जनक के समय से लगभग 2200 वर्ष पुराना माना जा सकता है।

इस प्रकार वैदिक ग्रन्थो में इसकी स्थापना से लेकर पुराणों में भी इस नगर का विवरण और वंशावली की सूचना हमें प्राप्त होती है, जिसके आलोक में इस नगर की प्राचीनता को हम वैदिक काल में, रामायण के समय से लगभग 2200 वर्ष पूर्व का मान सकते है।

@2025 Bihar Shodh Samaagam

सन्दर्भ

1. वाल्मिकी रामायण, बाल्यकाण्ड, गाथा 47, श्लोक-20

2. महाभारत वन वर्ष, 259

3. शतपथ ब्राह्मण-1, 4:1.

4. बिमला चरण, प्राचीन भारत की कुछ क्षत्रिय जनजातियाँ। यूनिवर्सिटी कलकत्ता, 1924, पृष्ठ-126।

5. बिमला चरण, प्राचीन भारत की कुछ क्षत्रिय जनजातियाँ। यूनिवर्सिटी कैलेंटा, 1924, पृष्ठ-126।

6. बिमला चरण, प्राचीन भारत की कुछ क्षत्रिय जनजातियाँ, विश्वविद्यालय कलकत्ता, 1924, पृष्ठ-126।

7. बिमला चरण, प्राचीन भारत की कुछ क्षत्रिय जनजातियाँ, यूनिवर्सिटी कलकत्ता, 1924, पृष्ठ-126।

8. वा0 रा0 बा0/50/6

9. बिमला चरण, प्राचीन भारत की कुछ क्षत्रिय जनजातियाँ। विश्वविद्यालय

कैलकंटा, 1924, पृष्ठ-128.

10. वा0 रा0 बा0 /31/15

11. वा0 रा0 बा0 /34/8

12. वा0 रा0 बा0 /47/17

13. वा0 रा0 बा0 /48/11
14. आध्यात्म रामायण, वाराणसी संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 6 सर्ग, श्लोक 4.

15. कृत्तिवास रामायण भुवन वाणी ट्रस्ट मौसम बाग, लखनऊ नन्द कुमार अवस्थी आदिकाण्ड, 128

16. कृत्तिवास रामायण भुवन वाणी ट्रस्ट मौसम बाग, लखनऊ नन्द कुमार अवस्थी आदिकाण्ड, 128

17. वा0 रा0 बा0 /35/1

18. वा0 रा0 बा0/35/6

19. वा0 रा0 बा0 /48/11

20. वा0 रा0 बा0 /50/1

21. लाहा, वी०सी, प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल उ०प्र० हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ, प्रथम-संस्करण-1972, पृष्ठ-397

22. वा0 रा0 बा0/47/17

23. वा0 रा0 बा0 /48/11

24. वा0 रा0 बा0/50/1

25. विष्णुपुराण /5/20

26. विष्णुपुराण /5/25-26

27. लाहा, वी०सी, प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल उ०प्र० हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ, प्रथम-संस्करण-1972, पृष्ठ-397

28. वा0 रा0 बा0 /13/21

@2025 Bihar Shodh Samaagam